RNI MAHMAR
36829-2010

ISSN - 2229-4929

Peer Reviewed

Akshar Wangmay

International Research Journal

UGC-CARE LISTED

Folk Literature & Folk Media

FEBRUARY 2020

Executive Editor : Dr. Subash Nikam

Principal,
Mahatma Gandhi Vidymandir's
Karmaveer Bhausaheb Hiray
Arts, Science and Commerce College,
Nimgaon, Tal. Malegaon Dist. Nasik (MS)

Co- Editor : Prof. Arjun G. Nerkar

Chief Editor : Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Address : 'Pranav', Rukmenagar,
Thodga Road, Ahmadpur, Dist. Latur 413515

NI : MAHMAR - 36829-2010ISSN – 2229-4929

AKSHAR WANGMAY

International Peer Reviewed Journal

UGC CARE LISTED JOURNAL

February - 2020

Folk Literature & Folk Media

Executive Editor
Dr. Subhash Nikam
Principal
Mahatma Gandhi Vidyamandir's
Karmaveer Bhausaheb Hiray Arts, Science & Commerce College, Nimgaon,
Tal. Malegaon, Dist. Nashik [M.S.] INDIA

Co-Editors
Assisst Prof Arjun G. Nerkar
Dr. Kalyan S. Kokane
Dr. V. D. Suryawanshi

Chief Editor
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

PRATIK PRAKASHAN, 'PRANAV, RUKMENAGAR, THODGA ROAD AHMEDPUR,

DIST. LATUR,-433515, MAHARASHTRA

Published by – Dr. Subhash Nikam, Principal, KBH College Nimgaon, Tal. Malegaon, Dist. Nahik, MS

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The authosr shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors Price: Rs. 1000/-

ISSN : 2229- 4929
February - 2020

Mahatma Gandhi Vidyamandir's

Karmaveer Bhausaheb Hiray Arts, Science and Commerce College
Nimgaon, Tal. Malegaon, Dist.-Nasik [M.S.] India- 423212

National Conference on
Folk Literature & Folk Media

13th & 14th February 2020

Sponsored By
Savitribai Phule Pune University, Pune

Convener
Prin. Dr. Subhash Nikam

Co-ordinator
Prof. Arjun G. Nerkar

http://kbhnimgaoncollege.com

INDEX

No.	Title of the Paper / Authors	Page No.
1	लोकसाहित्य में लोकगीत डॉ. योगिता हिरे	6 - 8
2	आदिवासी लोक सांस्कृति के संदर्भ में आदिवासी जनजीवन डॉ.पंडित बन्ने	9 - 14
3	आदिवासी लोकसाहित्य और समाज जीवन डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे (उशिर)	15 - 17
4	गुजरात की लोकधारा भवाई : एक संक्षिप्त अध्ययन डॉ. गीता परमार	18 - 21
5	भारतीय साहित्य : लोकसंस्कृति एवं लोकजीवन डॉ.नवनाथ गाड़ेकर	22 - 26
6	बंजारों की लोकसंस्कृति और लोकगीत प्रा.डॉ.व्ही.जी.राठोड	27 - 29
7	लोकगीत : 'जंगल के गीत' उपन्यास के विशेष संदर्भ में प्रा. हर्षल गोरख बच्छाव, डॉ.अनिता नेरे (भामरे)	30 - 34
8	लोकसाहित्य का इतिहास प्रा. डॉ. जाधव के. के.	35 -38
9	लोकसाहित्य के प्रकार डॉ. जालिंदर इंगले	39 - 41
10	लोकसाहित्य विमर्श : खानदेश की अहिराणी बोली प्रा. काळे मिनाक्षी बबनराव	42- 47
11	लोक साहित्य और फिल्म – डॉ. अनंत केदारे	48 - 52
12	लोकसाहित्य का स्वरूप एवं विकास प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव	53 - 55

13	लोक साहित्य के प्रकारो का वर्गीकरण प्रा. जगदीश संभाजी वाघ	56 .
14	लोकसाहित्य तथा संस्कृती प्रा. निलेश देशमुख	59 .
15	लोकसाहित्य : लक्षण, परिभाषा और क्षेत्र सहा. प्रा. शेवाळे राजाराम गमन	61 -
16	लोकसाहित्य और संस्कृती (आदिवासी लोकसंस्कृती केविशेष संदर्भ मे...) डॉ. सुलक्षणा जाधव	64 -
17	लोकसाहित्य और भारतीय संस्कृति डॉ. वाल्मीक डी. सूर्यवंशी	68 -
18	लोकसंगीत डॉ. भारती बाळकृष्ण धोंगडे, डॉ. उषा पुंडलिक शिरोडे	70 - 7
19	लोकसाहित्य और फिल्म प्रा. श्रीमती वडगे वृषाली रंगनाथ	75 - 7
20	लोकगीतों का स्वरुप और अहिरणी लोकगीतों के प्रकार प्रा. आर.एन. वाजळे	78 - 8
21	लोकगीतों का काव्य सौंदर्य प्रा.डॉ.योगेश विठ्ठल दाणे,	82- 8
22	लोक साहित्य का स्वरूप एवं वर्गीकरण:एक विश्लेषण डॉ० भवानी सिंह	87-9

'Akshar Wangmay' UGC Approved & Peer Reviewed International Reserch Journal | ISSN : 2229- 4929
Folk Literature & Folk Media RNI: MAHMAR-36829-2010 | February - 2020

लोकसाहित्य और भारतीय संस्कृति

डॉ. वाल्मीक डी. सूर्यवंशी

हिंदी विभागाध्यक्ष,

कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, निमगांव,

ता. मालेगांव जि. नाशिक

भारतीय संस्कृति ब्रहम की भाँति अवर्णनीय है। वह व्यापक, अनेक तत्वों का बोध कराने वाली, जीवन की विविध प्रवृत्तियों से संबन्धित है, अत: विविध अर्थो व भावों में उसका प्रयोग होता है। मानव मन की बाह्य प्रवृत्ति–मूलक प्रेरणाओं से जो कुछ विकास हुआ है उसे सभ्यता कहेंगे और उसकी अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों से जो कुछ बना है, उसे संस्कृति कहेंगे। लोक का अभिप्राय सर्वसाधारण जनता से है, जिसकी व्यक्तिगत पहचान न होकर सामूहिक पहचान है। दीन–हीन, शोषित, दलित, जंगली जातियाँ, कोल, भील, गोंड (जनजाति), संथाल, नाग, किरात, हूण, शक, यवन, खस, पुक्कस आदि समस्त लोक समुदाय का मिलाजुला रूप लोक कहलाता है। इन सबकी मिलीजुली संस्कृति, लोक संस्कृति कहलाती है। इन सबका अलग–अलग रहन–सहन है, वेशभूषा, खान–पान, पहरावा–ओढावा, चाल–व्यवहार, नृत्य, गीत, कला–कौशल, भाषा आदि सब अलग–अलग दिखाई देते है, परन्तु एक ऐसा सूत्र है जिसमें ये सब एक माला में पिरोई हुई मणियों की भाँति दिखाई देते हैं, यही लोक संस्कृति है। लोक संस्कृति का एक रूप हमें भावाभिव्यक्तियों की शैली में भी मिलता है, जिसके द्‌वारा लोक–मानस की मांगलिक भावना से ओत प्रोत होना सिध्द होता है। वह 'दीपक के बुझने' की कल्पना से सिहर उठता है। लोक साहित्य में लोक मानव का हृदय बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती गुनगुनाती है। लोक जीवन में पग पग पर लोक संस्कृति के दर्शन होते है। लोक साहित्य उतना ही पुराना है जितना कि मानव, इसलिए उसमें जन जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति सभी कुछ समाहित है।

अधिकतर भारतीय विद्‌वानों की मान्यता है कि 'लोक' ऐसा जनसमूह है जो अभिजात्य संस्कार, सभ्यता और शिक्षा से रहित है जो अपने परंपरा प्रथित रीति रिवाजों और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने के कारण अशिक्षित एवं अल्पसभ्य कहा जाता है, 'लोक' का प्रतिनिधित्व करता है। तथा जो सुसंस्कृत लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और सहज जीवन जीने का अभ्यासी है। वह जनसुमदाय आदि प्रकृतियों से प्रभावित होता है तथा परंपरा के प्रवाह में ही इसका जीवन चलता है। 'लोक' नगर तथा ग्राम दोनों ही प्रकार की संस्कृतियों में विद्यमान है। साथ ही यह जनशक्ति का पर्याय भी है तथा समाज का गतिशील अंग भी। इसके कल्याण में समस्त मानव समाज का कल्याण निहित है।

किसी भी देश की सभ्यता एवं संस्कृति, धर्म, रीति–रिवाज, कला साहित्य एवं सामाजिक आकांक्षाओं का सूक्ष्म अवलोकन लोक साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। श्रेष्ठ साहित्य का उदगम स्त्रोत भी यही लोकसाहित्य है और शिष्ट साहित्य के विकास की जडें भी लोकमानस की भावभूमि से ही तत्व ग्रहण करती रहती हैं लेकिन शिष्ट साहित्य का झुकाव प्राय: अंजित वर्ग की ओर अधिक रहता है। लोक साहित्य की प्रवृत्ति इससे थोडी अलग होती है। लोक साहित्य में बहुसंख्यक वर्ग का उल्हास और उच्छवास सनिनहित रहता है। इसके निर्माण में समग्र समाज का हाथ होता है अत: इसका झुकाव भी बहुसंख्यक वर्ग की ओर ही अधिक होता है। लोक साहित्य बहुधा अलिखित ही रहता है। इस साहित्य के रचयिता का नाम प्राय: अज्ञात रहता है। लोक अंतर्गत रूपसे जो कुछ कहता–सुनता है। उसे समूह की वाणी बनाकर और समूह में घुला–मिलाकर ही कहता है। लोक साहित्य में लोक संस्कृति का वास्तविक प्रतिबिम्ब ही होता है। साधारण

जनता का हंसना, गाना, खेलना, रोना जिन शब्दों में अव्यक्त हो सकता है वह सब कुछ लोक-... परिधि में आ जाता है।

आज जबकि इस विश्व में देश:काल, संस्कृति-समाज, परिवार का विखण्डन आधुनिकता का ... गया है। कभी परिवार का अर्थ कुटूम्ब हुआ करता था, परन्तु आज वह पति-पत्नी और बच्चों तक सीमि... है। ऐसी स्थिती में अपराध, हत्या, आत्महत्या, प्रमाद, उन्माद जैसी मनोवैज्ञानिक जटिलताएँ मनुष्य को ... हैं। परिवार टूट चुके हैं, यहाँ तक कि दाम्पत्य-सम्बन्ध तक नगरीकरण, आर्थिक उदारीकरण, ... वैश्वीकरण की बलि चढ चुके हैं। संवादहीनता, घुटन, आक्रोश, अविश्वास आज की मूल प्रवृत्तियाँ बन ...

पारिवारिक जीवन में भोग, छीना:झपटी, एक दूसरे को अवर कोटि का सिध्द करने की होड ... भाई-भाई का दुश्मन है, पति-पत्नी के बीच अधिकारों को लेकर टकराव है, माता-पिता अब ... सामान हो गये हैं। ऐसे नवीन जीवन मूल्यों में भारतीय परम्पराओं को यदि जीवित रखना है, ... मध्यकालीन एवं प्राचीनकालीन, भारतीय सांस्कृतिक-आख्यानों, कथाओं, गाथाओं के सांस्कृतिक संदेशों को ... देना अनिवार्य हो गया है। लोक-साहित्य एवं लोक संस्कृति इनका सर्वश्रेष्ठ स्त्रोत है।

सारांश :

लोकसाहित्य में भारतीय संस्कृति की आत्मा बसती है। विवाह गीत, संस्कार गीत, सोहर, विरह के गीत, चैता, कजरी लोकगीत भारतीय संस्कृतिक के परिदृश्य को रेखंकित करता है।

कुल मिलाकर लोकसंस्कृति ही भारतीय संस्कृति की जड है। जिसके रस से भारतीय संस्... पौधा पल्लवित, पुलकीत और सुफलित है। अत: वर्तमान समय में लोक साहित्य एवं लोक संस्... परम्परा की प्रासंगिकता एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य को बनाए रखने तथा इसके संरक्षण एवं संवर्धन ... सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर प्रयास अवश्य होने चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ :

१) लोकसाहित्य ओर संस्कृति – डॉ. दिनेश्वर प्रसाद

२) लोकसाहित्य का शास्त्रीय अनुशीलन – डॉ. महेश गुप्त

३) हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश – डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त

४) लोकसंस्कृति की रूपरेखा – डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय

५) जागरण हिंदी पत्रिका